Total Pages : 3 **Roll No. ----------**

DMA-102

ज्योतिष शास्त्र में रोग ज्ञान के आधार

Diploma in Medical Astrology (DMA)

प्रथम वर्ष, सत्र जून 2022

Time: 2 Hours Max. Marks: 100

नोट : यह प्रश्न पत्र सौ (100) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड –क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[2 x 26 = 52]

Q.1. रोग क्या है ज्योतिषीय दृष्टि से परिचय दीजिए। तथा जन्म कुण्डली के द्वारा कैसे रोगों का ज्ञान किया जाता है।

P.T.O.

Q.2. सूर्यादि नव ग्रह जनित रोगों के विषय में विस्तार पर्वूक उल्लेख करें।

Q.3. अरिष्ट से क्या तात्पर्य है, व कितने प्रकार का होता है विस्तार से चर्चा करें।

Q.4. अरिष्ट भंग से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिये।

अथवा

दशा के अनुसार अरिष्ट काल का उल्लेख कीजिए।

Q.5. नक्षत्रों से जनित रोगों का सविस्तार परिचय दीजिए।

खण्ड – ख

लघु उत्तरों वाले प्रश्न

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बाराह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[4 x 12 = 48]

Q.1. आयु की परिभाषा देते हुए, आयु के प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मध्यमायु दीर्घायु को परिभाषित करते हुए रोगों का भी उल्लेख कीजिए।

Q.2. निसर्गायु साधन विधि सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

Q.3. कुण्डली के अनुसार आयु विचार व आयु परिक्षण कैसे किया जाता है।

Q.4. योगारिष्ट से क्या तात्पर्य है।

Q.5. रोग निदान की विधियाँ की समीक्षा कीजिए।

Q.6. वेदों का परिचय दीजिए।

अथवा

वेदांग किसे कहते हैं, व कौन–कौन से हैं।

Q.7. आयु को परिभाषित करें।

Q.8. अल्पायु से क्या तात्पर्य है किन्ही तीन अल्पायु योगों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

रोग सूचक ग्रह व भावों का वर्णन कीजिए।

****